अंक-9, सितम्बर, 2013

ISSN : 2249-4146

स्त्रीकाल

(स्त्री का समय और सच)

अंक : दलित स्त्रीवाद

अतिथि संपादक : अनिता भारती

इस अंक में

संपादकीय

वसुधैव कुटुम्बकम् का छद्म	संजीव चंदन	3

अतिथि संपादकीय

दलित स्त्रीवाद पर बहस	अनिता भारती	5

हस्तक्षेप

दलित स्त्रियाँ अपनी बात अलग ढंग से रखती हैं	गोपाल गुरु/अनुवादक : डॉ. अनुपमा गुप्ता	7
फैंसी स्त्रीवादी आयोजनों में जाति-मुद्दों की उपेक्षा	ज्योत्सना सिद्धार्थ/अनुवादक : रंजना बिष्ट	10

विरासत

हिन्दू नारी का उत्थान और पतन	बी.आर.अम्बेडकर	12
हिन्दू कोड बिल और बाबा साहेब का संघर्ष		20
जोतिबा फुले को सावित्री बाई फुले के तीन प्रेम-पत्र		80
स्त्री-पुरुष तुलना	ताराबाई शिन्दे	82

आलेख

जाति, वर्ग और लिंग	उमा चक्रवर्ती/अनुवादक : विजय झा	25
जेण्डर और सत्ता : इतिहास के हाशियों पर...	सौरभ दुबे/अनुवादक : डॉ. अनुपमा गुप्ता	35
भारत में जाति और नारीवाद	निवेदिता मेनन/अनुवादक : डॉ. अनुपमा गुप्ता	47
दलित स्त्रीवादी दृष्टिकोण की ओर	शर्मिला रेगे/अनुवादक : डॉ. अनुपमा गुप्ता	49
दलित स्त्री आंदोलन तथा साहित्य : अस्मितावाद से आगे	बजरंग बिहारी तिवारी	85
ब्लैक वूमन आत्मकथाएँ	गरिमा श्रीवास्तव	94
अस्मितावादी विमर्श में दलित स्त्री का स्वर	सुमित्रा महरौल	110
झलकारी बाई : हमने सुनी कहानी थी	रवि रंजन	112
मध्यकालीन दलित स्त्री साहित्य	सुनीता गुप्ता	114
लोक गीतों में व्यक्त दलित समाज	कौशल पंवार	121
थेरीगाथा में दलित स्त्रियाँ	रजनीश कुमार सिंह	123
स्त्री पराधीनता के आयाम	किंगसन सिंह पटेल	127
बलात्कार तथा हत्याओं की संस्कृति और डॉ. धर्मवीर	कवितेन्द्र इन्दु	133
जाति-भेद : डॉ. अम्बेडकर के विचार	टेकचन्द	139
दलित स्त्री कविता : एक पाठ	रामनरेश	143
तिहरे शोषण की शिकार दलित स्त्री	अरुण कुमार प्रियम	145

अस्मितावादी विमर्श में दलित स्त्री का स्वर

सुमित्रा महरौल

अस्मितावादी विमर्श में दलित स्त्री का स्वर पूर्व की अपेक्षा अब काफी मुखर एवं व्यापक हो गया है। इस विमर्श में स्त्रियों की भागीदारी बड़े पैमाने पर महाराष्ट्र से आ रही थी। बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर की कार्यस्थली होने के कारण महाराष्ट्र में दलितों तक शिक्षा एवं चेतना का आलोक अपेक्षतया पहले पहुँचा था।

दलित स्त्री की दारुण दशा का मार्मिक व जीवन्त चित्र प्रस्तुत करती स्त्रियों द्वारा लिखित आत्मकथाएँ दलित स्त्रियों की सामाजिक, आर्थिक, मानसिक स्थितियों के वास्तविक व कारुणिक वर्णनों से भरी पड़ी हैं।

चाहे वह दलित मराठी लेखिकाओं द्वारा लिखित आत्मकथाएँ हों, चाहे तमिल दलित लेखिका 'वामा' की आत्मकथा, चाहे हिन्दी में लिखित सुशीला टाकभौरे की आत्मकथा 'शिकंजे का दर्द'' जाति व पितृसत्ता, दोनों से एक समान उत्पीड़न के दंश दलित नारी को मिले हैं।

भारतीय समाज जाति, धर्म और पितृसत्ता पर आधारित है। पितृसत्ता ने सारे नियम, सारी परंपराएँ अपनी जरूरत के अनुसार बनाई हैं। दलित स्त्रियाँ जाति व पितृसत्ता दोनों का सम्मिलित अत्याचार झेलती हैं, इसलिए उनके अनुभव बहुआयामी हो जाते हैं। दलित स्त्रियों के जीवन के अभिशापों में दलित पुरुषों का वर्चस्व झेलना सबसे बड़ा है।

दलित समुदाय की सामाजिक आर्थिक स्थिति उनके शोषण, वर्जनाओं, पीड़ाओं की प्रामाणिक अभिव्यक्तियाँ दलित साहित्य में स्थान-स्थान पर बिखरी मिलेंगी। दलित स्त्री भी इस साहित्य में आई है, पर केवल एक शोषित के रूप में अस्मितावादी विमर्श में। हिन्दी की प्रमुख दलित महिला रचनाकारों में विमल थौराट, सुशीला टाकभौरे, हेमलता माहेश्वर, अनीता भारती, रजत रानी मीनू, रजनी तिलक, पूनम तुषामड़, रजनी अनुरागी, कौशल पवार, रजनी दिसोदिया, पुष्पा विवेक इत्यादि के नाम लिए जा सकते हैं।

हिन्दी में सृजनरत ये दलित महिला रचनाकार साहित्य की विभिन्न विधाओं में स्वयं को अभिव्यक्त कर रही हैं। कहानी, कविता, एकांकी, नाटक, आत्मकथा, संस्मरण, विचारपरक एवं समीक्षात्मक लेख इन सभी दिशाओं में ये रचनाकार सक्रिय हैं।

विमल थोराट, सुशीला टाकभौरे, अनीता भारती व हेमलता माहेश्वर रचनात्मक साहित्य के अलावा स्त्री व दलित जीवन से संबंधित चिन्तनपरक लेखों के माध्यम से भी अपने समाज को नयी सोच व नयी दिशा देने का प्रयास कर रही हैं। विमल थौराट रचित 'दलित साहित्य का स्त्रीवादी का स्वर' नामक पुस्तक इस दिशा में विशेष उल्लेखनीय है।

दलित महिला रचनाकारों द्वारा रची जाने वाली रचनाओं को कथ्य के स्तर पर कई श्रेणियों में बाँटा जा सकता है।

सबसे पहला स्तर है जाति व पितृसत्ता के कारण दलित स्त्री पर होने वाले दमन एवं शोषण को उद्घाटित करने वाली रचनाएँ। समाज में उसकी अति हीन व दयनीय स्थिति का चित्रण इन रचनाओं में हुआ है।

यहाँ पर यह उल्लेखनीय है कि दलित लेखकों द्वारा सृजित महिला पात्रों को भी मैंने अपने इस लेख में लेने का प्रयास है।

क्षेत्र के अनुसार उत्पीड़न का स्वरूप बदल जाता है। ग्रामीण क्षेत्र में गैर दलित भिन्न तरीके से दलित स्त्री को प्रताड़ित करते हैं, ग्रामीण क्षेत्रों में होने वाला शोषण पूर्णतया प्रत्यक्ष एवं दृष्टिगत होता है दलितों को जातिसूचक नामों से पुकारा जाता है, मौका मिलने पर दलित स्त्री के यौन शोषण का कोई भी अवसर गैरदलित छोड़ना नहीं चाहते, दलित स्त्री को उसके श्रम का बहुत कम मूल्य दिया जाता है।

किन्तु शहरी क्षेत्र के तथा चर्चित शिक्षित एवं संभ्रात कहे जाने वाले समाज में शोषण का स्वरूप प्रत्यक्ष दृष्टिगत नहीं होता।

ग्रामीण क्षेत्र में दलित समाज के शोषण उत्पीड़न के अनेक चित्र सुशीलाजी की रचनाओं में दिख जाएँगे। इस संदर्भ में उनकी धौआ माँ, बदला, संघर्ष एवं सिलिया कहानियों की चर्चा की जा सकती है।

सिलिया कहानी सवर्णों की संकीर्ण दृष्टि व नीति के खिलाफ एक बालिका के अदम्य साहस, जीवट व जिजीविषा की कहानी है, तभी तो जो हाथ कभी उसे विकट गर्मी में दो घूँट पानी तक से वंचित रखते हैं, वही हाथ कुछ समय बाद उसी बालिका को खचाखच भरे सभागार में सम्मानित करते हैं।

कौशल पवार की 'दिहाड़ी' एवं रजत रानी मीनू की 'फरमान' नामक कहानियाँ दलितों पर होने वाले शोषण-उत्पीड़न के अनेक आयामों को हमारे सामने खोलती हुई सी प्रतीत होती हैं। पूनम तुषामड़ द्वारा रचित 'बिच्छू' नामक कहानी भी अपने कथ्य एवं वस्तु के कारण विशिष्ट बन पड़ी है।

शहरी क्षेत्र में प्रताड़ना के बदले हुए स्वरूप को मैंने अपनी प्रतिकार, आघात व त्रिशंकु नामक कहानियों में उजागर करने का प्रयास किया है।

प्रतिकार कहानी की पात्र मीता आर्थिक व शैक्षणिक दृष्टि से समर्थ होने के बावजूद जातिगत भेदभाव के कारण स्वयं को अनेक बार उपेक्षित-अपमानित महसूस करती है। बगैर किसी अपराध के समूह से बाहर एकाकी जीवन जीने के लिए स्वयं को अभिशप्त पाती है।

'आघात' कहानी दलितों के प्रति गैर दलितों के दोगले व स्वार्थपूर्ण व्यवहार का पर्दाफाश कर दलितों में जाग्रत एकता का आभास कराती है।

शहरी क्षेत्र में, व्याप्त जातिगत भेदभाव से संबंधित पूनम तुषामड़ की एक कविता इस संदर्भ में द्रष्टव्य है।

कराया है एहसास/ सब कुछ जानने के बावजूद भी/ रह जाता है, कुछ शेष/ नजदीकियों के बाद भी/ तुम जानना चाहते हो कुछ और/ जो प्रश्न बनकर/ उतरता है तुम्हारी आँखों में/ तुम्हारे इस विचलन में/ प्रश्नों की धुरी के केन्द्र में/ घूमता है एक ही प्रश्न/ अनेक रूप लिए/मित्र, तुम्हारी जाति क्या है

शहरी क्षेत्र में व्याप्त शोषण के स्वरूप पर इस प्रसंग में कैलाश चन्द्र चौहान के उपन्यास 'सुबह के लिए' में आए लक्ष्मी वाले संदर्भ को लिया जा सकता है। नगर निगम में सफाई कर्मचारी के रूप में नियुक्त लक्ष्मी के रूप में सौन्दर्य पर गैर दलित इन्सपेक्टर आसक्त हो जाता है, मगर अपनी यौन अभिलाषाओं की पूर्ति न होने पर वह किस-किस तरह से दलित महिला का दमन करता है, इसका बड़ा सटीक चित्रण कैलाश चन्द्र चौहानजी ने अपने उपन्यास में किया है।

दूसरी श्रेणी में उन रचनाओं को लिया जा सकता है, जहाँ दलित स्त्री चेतना सम्पन्न हो गयी है। वह जान गयी है कि पूर्व जन्म के कर्मों के कारण उसकी यह दुर्दशा नहीं है। अपने वास्तविक शोषकों के चेहरे अब उसने पहचान लिए है और प्रतिरोध का हौसला भी अब उसमें आ गया है।

दलित स्त्री में जाग्रत चेतना एवं उसके हौसले को प्रतिबिम्बत करती एक दलित कविता द्रष्टव्य है।

प्रज्ज्वलन के नाम पर/ पानी के छींटे मार कर, मुझे बुलाते रहो/ खुद हाथ सेंकते रहो, कहकहे लगाते रहो/ पर अब, नहीं आऊँगी, मैं झाँसे में/ धूर्त बहेलियों के झाँसे में/ नहीं पड़ने दूँगी खुद पर/ बहकावे का पानी/भीतर की अग्नि को मैं धधकाऊँगी/खुद भी तपूँगी, और तुम्हें भी तपाऊँगी।

इस क्रम में अजय नावरिया द्वारा रचित इज्जत कहानी की चर्चा की जा सकती है। इज्जत कहानी की नायिका गैर दलितों के दुष्कर्म के बाद घुटने नहीं टेकती। दोषियों को सजा दिलाने का हौसला अपने भीतर संजोती है। समाज व परिवार में बदनामी के डर से आतताइयों को वह खुला नहीं छोड़ सकती ताकि वही हरकत वह फिर दूसरों के साथ न कर पाएँ।

टेकचंद द्वारा रचित 'उतरन' नामक कहानी में भी दलित स्त्री के इसी हौंसले व हिम्मत का चित्रण है। स्वयं अपने बाजुओं के दम पर अपना और अपने बच्चों का पालन-पोषण करने वाली कमली यहाँ पितृसत्ता के सामने नहीं झुकती, दम भर उसका सामना करती है।

दलित समाज में दलित स्त्री की स्थिति का सच्चा सवाक अंकन है सुशीला टाकभौरे की आत्मकथा 'शिकंजे का दर्द'। दलित, स्त्री व निर्धनता रूपी तिहरे संतापों को झेलती सुशीलाजी परिस्थितियों के समक्ष झुकती नहीं, बल्कि अपने परिश्रम, लगन, आत्मविश्वास व मनोबल के चलते न केवल अपने जीवन लक्ष्यों को प्राप्त करती है बल्कि समाज के समक्ष आदर्श के रूप में स्थापित हो चुकी है।

उनकी दमदार कहानी की पात्र सुमन अपनी आत्मशक्ति के बल पर ही अपने शोषक जग्गू पहलवान का न केवल सामना करती है अपितु उससे प्रेरणा लेकर जग्गू द्वारा प्रताड़ित अन्य नारियाँ जैसे प्रेमलता व पगली भी जग्गू पर प्रहार कर अपना प्रतिशोध लेती है। नारी में जाग्रत यह चेतना ही उसकी मुक्ति का प्रथम चरण है।

इसी तरह अनीता भारतीजी की कहानी 'तीसरी कसम' पितृसत्ता प्रधान समाज में नारी की शोचनीय स्थिति के साथ नारी के साहस व स्वाभिमान की गाथा को समेटे है।

यह कहानी नारी में आत्मसम्मान, स्वाभिमान व चेतना जाग्रत होने की कथा कहती है।

तभी अपने दोगले पति से अलग रहती हुई रमैनी पति का उत्पीड़न नहीं सहती अपितु पति का सामना करती है।

स्वयं अशिक्षित होते हुए भी शिक्षा का महत्त्व समझती है व अपने बच्चों को शिक्षित करने के प्रति दृढ़ संकल्प है।

समकालीन परिवेश से स्वयं को अछूता रख पाना किसी भी रचनाकार के लिए संभव नहीं है?

भूमंडलीकरण व उदारीकरण के इस दौर में दलित समाज के प्रति सामज व व्यवस्था के चेहरे से नकाब कई दलित रचनाकारों ने उठाई हैं। अनीता भारती की 'सीधा प्रसारण' नामक कहानी बताती है कि मीडिया किस तरह नारी पर हो रहे शोषण-उत्पीड़न को टी.आर. पी. बढ़ाकर अपने मुनाफे के साधन के रूप में अपनाता है। तभी तो ग्रामीण दलित बालिका पर हुए अत्याचार उसके चैनलों की सुर्खियाँ नहीं बनते।

'बीज बैंक' नामक एक अन्य कथा में उन्होंने बहुराष्ट्रीय कंपनियों के दोगले एवं शोषक चरित्र को हम सबके समक्ष खोल कर रख दिया है।

रजनी दिसोदिया ने अपनी 'घर परिवार' नामक कहानी में लिव इन रिलेशन में रह रहे युगलों की कथा को तो लिया ही है, घरेलू हिंसा की शिकार दलित स्त्रियों की कथा भी उन्होंने इस कहानी में बयान की है।

इसी तरह सूरज बड़त्या की कहानी 'गुफाएँ' की नायिका अपूर्वा अम्बेडकरवादी पिता एवं मामा के अंर्तविरोधी विचारों के कारण अपने प्रेमी राजन से विवाह नहीं कर पाती व अमन से विवाह के लिए विवश की जाती है। मार्क्सवादी विचारों वाला अमन अंदर से नितांत पुरुषवादी विचारों का पोषक है। पिता एवं पति दोनों की की कथनी एवं करनी में भेद है। अन्ततः अपूर्वा पति से अलग हो एकाकी जीवन व्यतीत करने का निर्णय लेती है। वैवाहिक संबंधों के युगीन तनाव व पुरुषों के अंर्तविरोधी चरित्रों के कारण कहानी विशिष्ट बन पड़ी है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि अस्मितावादी विमर्श में दलित स्त्री चतुर्दिक दिशाओं में सक्रिय है, उसकी दृष्टि अतीत से लेकर यथार्थ के थपेड़ों से प्रति पल बदलते हुए वर्तमान और उस वर्तमान के लिए उत्तरदायी कारकों तक से अछूती नहीं है, यहाँ तक कि समय की गर्त में छिपे हुए भविष्य तक वह अपनी दृष्टि पहुँचाने का यत्न कर रही है।

किन्तु यहाँ पर मैं यह भी कहना चाहूँगी कि शिक्षा, चेतना एवं विवेकबुद्धि से सम्पन्न होने के बाद ही उसकी दृष्टि और सोच में यह फैलाव व गहराई आ पाई है।

अपने दलित समाज की शत-प्रतिशत स्त्रियों को शिक्षित व चेतना सम्पन्न बनाने की दिशा में अभी बहुत सा कार्य किया जाना शेष है, पर शुरुआत हो चुकी है व आने वाले वर्षों में अपने इस वृहत्तर लक्ष्य को हम प्राप्त कर पाएँगे, ऐसी मैं आशा रखती हूँ।

लेखिका दिल्ली विश्वविद्यालय के एक कॉलेज में पढ़ाती हैं।
संपर्क :9811775992